ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 124-127

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

शिक्षा समस्याएं और समाधान

चमन सिंह

विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग डीपीडीसी अन्तर्गत महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय

वाराणसी, (उत्तर प्रदेश), भारत

Received- 10.04.2020, Revised- 14.04.2020, Accepted - 19.04.2020 E-mail: dr.chaman2017@gmail.com

सारांश : *भारत शिक्षा के क्षेत्र में सदैव अग्रणी रहा है। भारतीय शिक्षा पद्धति एवं भारतीय ज्ञान दर्शन से प्रभावित होकर कभी दुनिया के कोने कोने से लोग ज्ञानार्जन करने के लिए इस पावन धरती पर आया करते थे। एक समय था जब भारत दुनिया के लिए ज्ञान का एक मुख्य केंद्र था। तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालयों को आज भला कौन नहीं जानता। दुनियाभर से लोग यहां ज्ञान अर्जित करने के लिए और अपनी पिपासा को शांत करने के लिए यहां आया करते थे। इसलिए भारत को विश्वगुरु के नाम से जाना जाता है। कभी संपूर्ण विश्व को ज्ञान प्राप्त प्रदान करने वाला भारत आज स्वतंत्रता के 70 वर्षों के पश्चात भी शैक्षिक दृष्टि से कहां खड़ा है, यह एक अत्यन्त विचारणीय विषय है। कहां खो गई है हमारी वह सांस्कृतिक विरासत? कहां है हमारा वह समृद्ध शिक्षा दर्शन जिसके कारण यह पावन धरा दुनिया के लिए वर्षों तक आकर्षण का केंद्र बनी? आज तेजी से आगे बढ़ने की अंध चाह में कहीं हमने अपना बहुत कुछ पीछे तो नहीं छोड़ दिया। आधुनिकता की अंधी दौड़ में कहीं हम अपने वास्तविक मार्ग से भटक तो नहीं गए। इन प्रश्नों का उत्तर खोजना अत्यंत आवश्यक है। हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली हमें कहां लेकर जा रही है। प्रबुद्ध, विवेकी जनों, महान दार्शनिक और शिक्षा शास्त्रियों तथा नीति निर्माताओं को इस पर विचार करना चाहिए।*

कुंजीभूत शब्द– भारतीय शिक्षा, ज्ञान दर्शन, ज्ञानार्जन, पावन धरती, ज्ञान अर्जित, पिपासा, विश्वगुरु,आधुनिकता।

वैदिक काल से लेकर आज तक हमारी शिक्षा प्रणाली विभिन्न चरणों से होकर गुजरी है। गुरुकुल से लेकर बौद्ध मठों तक, मकतबों और मदरसों से लेकर स्कूल एवं कॉलेज तक विभिन्न काल खंडों का प्रभाव आज भी हमारी शिक्षा प्रणाली पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

भारत में मुस्लिमों के आगमन से शिक्षा का इस्लामीकरण हुआ और शिक्षा अरबी फारसी के माध्यम से दी जाने लगी। ठीक उसी प्रकार अंग्रेजों के भारत आगमन से शिक्षा का अंग्रेजीकरण हुआ और शिक्षा अंग्रेजी के माध्यम से दी जाने लगी। अंग्रेजी भाषा को अनिवार्य कर दिया गया और लॉर्ड मैकाले की शिक्षा नीति को अनिवार्य रूप से लागू कर दिया गया। इस प्रकार शिक्षा आम आदमी की पहुंच से दूर होने लगी। भारतीय शिक्षा प्रणाली को सबसे अधिक लॉर्ड मैकाले ने झकझोरा जिन्होंने अंग्रेजी भाषा की विशेषता को दर्शाते हुए बेहिचक होकर सकल भारतीय भाषाओं को तुच्छ करार दे दिया। लॉर्ड मेकाले यहीं नहीं रुके उन्होंने यह तक कह दिया कि यदि भारत की समस्त भाषाओं में लिखे गए ग्रंथों को एक जगह इकट्ठा किया जाए और उनके समक्ष अंग्रेजी साहित्य की एक अलमारी के कोने में पड़ी पुस्तकों को रखा जाए तो निश्चित रूप से सारे भारतीय ग्रंथों पर अंग्रेजी भाषा में लिखी गई कुछ चंद पुस्तकें भारी पड़ेगी तथा श्रेष्ठ सिद्ध होंगी। इस प्रकार अंग्रेजी भाषा को श्रेष्ठ मानकर अनिवार्य कर दिया गया। उन्होंने अंग्रेजी भाषा में लिखे गए साहित्य को श्रेष्ठ माना और कहा कि अगर ज्ञान अर्जित करना है तो अंग्रेजी भाषा सीखनी होगी ताकि आप अंग्रेजी भाषा में लिखे गए साहित्य का अध्ययन कर सकें और ज्ञान अर्जित कर सकें। भारतीय भाषाओं में लिखे गए साहित्य को तुच्छ सिद्ध करने का प्रयास किया और कहा कि यदि भारतीय लोग वैश्विक ज्ञान अर्जित करना चाहते हैं तो उन्हें भारतीय भाषाओं में लिखे ग्रंथों को छोड़कर अंग्रेजी भाषा में लिखे गए साहित्य का अध्ययन करना चाहिए तभी वे विश्व का ज्ञान अर्जित कर सकते हैं।

भारतीय भाषाओं में लिखे गए ग्रंथों और भारतीय शिक्षा दर्शन एवं ज्ञान के साथ यह एक ऐसा अभद्र व्यवहार था। गुलामी की जंजीरों में जकड़ा भारत अंग्रेजी शासन से मुक्त होने के लिए छटपटाने लगा। अंग्रेजों के अत्याचारों और शोषण से परेशान भारतीय जनमानस एकजुट होकर स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़ा। आखिर एक लंबे संघर्ष के बाद हमें आजादी मिली। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात 565 रियासतों में बंटे भारत को एक अखंड भारत बनाने का प्रयास किया गया। नए भारत के निर्माण के लिए नई शिक्षा नीति का गठन किया गया जिसे राधा कृष्ण आयोग के नाम से जाना जाता है। आयोग ने बेहतर शिक्षा के संदर्भ में कई महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए। इस प्रकार उसके पश्चात माध्यमिक शिक्षा आयोग, कोठारी आयोग, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, तथा संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति आदि विभिन्न आयोगों एवं शिक्षा समितियों ने शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने हेतु अपनी महत्वपूर्ण सिफारिशें प्रस्तुत की। इन भारतीय

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

शिक्षा आयोगों द्वारा दी गई सिफारिशों ने भारतीय शिक्षा को नई दिशा प्रदान करने के लिए अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शिक्षा में कुछ नए समीकरणों के साथ हम आगे बढ़े। नई–नई तकनीकों, युक्तियों, विधियों, तथा ई लर्निंग के उदय एवं आविर्भाव से शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन होने शुरू हुए। हस्त लेखन के स्थान पर कंप्यूटर का प्रचलन बढ़ने लगा और धीरे–धीरे हर कार्यालय में कंप्यूटर अनिवार्य रूप से प्रयोग किया जाने लगा। शिक्षा का सार्वभौमिकरण, निजीकरण तथा व्यवसायीकरण तीव्र गति से होने लगा। आम आदमी तक शिक्षा की पहुंच हुई तथा अनिवार्य और निशुल्क शिक्षा से अनवरत साक्षरता दर में वृद्धि हुई जिसके परिणाम स्वरूप भारत की साक्षरता दर में बढ़ोतरी हुई। इन प्रयासों से भारत साक्षर तो हुआ लेकिन स्वाबलंबी नहीं। आखिर शिक्षा का अर्थ क्या है, केवल बड़ी–बड़ी डिग्रियां हासिल करना मात्र? । वह शिक्षा किस काम की जो व्यक्तित्व का संपूर्ण एवं सर्वांगीण विकास करने में असमर्थ हो। वह शिक्षा किस काम की जिससे नैतिक, चारित्रिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास न हो सके। आखिर वह शिक्षा किस काम की जो व्यक्तित्व को स्वावलंबी ना बना सके। केवल प्रमाण पत्र दिखाने से योग्यता एवं पात्रता सिद्ध नहीं हो सकती। आज हमारे देश में गुणात्मक शिक्षा के अभाव में युवाओं के पास डिग्रियां तो बड़ी–बड़ी है लेकिन कोई हुनर नहीं है, कोई कौशल नहीं है जिसके कारण बेरोजगारी दिनों दिन बढ़ती जा रही है। वर्तमान स्थिति बहुत भयावह है आज दस रिक्त पदों के लिए 10000 बेरोजगार खड़े हो जाते हैं। क्या यह हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता पर सवालिया निशान नहीं है। आखिर इस समस्या का समाधान कौन कब होगा और कैसे निकलेगा। वर्तमान शिक्षा प्रणाली के साथ हम देश की भावी पीढ़ी को किस दिशा में ले जाना चाहते हैं।

शिक्षा किसी भी देश की वह ताकत है होती है जिससे उस देश की दशा और दिशा तय होती है। किसी भी देश की समृद्धि और खुशहाली के लिए शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। क्योंकि राष्ट्र निर्माण के लिए शिक्षा एक अत्यंत महत्वपूर्ण हथियार होती है। जिस देश की शिक्षा प्रणाली मजबूत नहीं है वह देश सकल मानव संसाधन के विकास के अभाव के कारण एक विकसित राष्ट्र नहीं बन सकता। राष्ट्र निर्माण के लिए महज डिग्री धारी नहीं बल्कि पूर्णतया शिक्षित एवं प्रशिक्षित नागरिकों का होना अत्यंत आवश्यक है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाना अत्यंत आवश्यक है। दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली ही विभिन्न सामाजिक समस्याओं को जन्म देती है।

यदि भारत को पुनः विश्वगुरु बनाना है तो निश्चित रूप से हमें अपनी संस्कृति और संस्कारों की ओर लौटना होगा। हमें भारतीय धर्म और दर्शन तथा उस विराट भारतीय चिंतन को आत्मसात करना होगा। वसुधैव कुटुंबकम की पावन धारा यहीं प्रस्फुटित हुई थी। भारतीय सभ्यता एवम संस्कृति तथा ज्ञान दर्शन की दुनिया हमेशा चल रही है। आज जरूरत है उपरोक्त वर्णित सवालों के जवाब तलाशने की ताकि सकल समस्याओं का स्थाई समाधान निकाला जा सके । भारत का इतिहास अत्यंत गौरवशाली रहा है। इस बात का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि एक जमाने में भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। आखिर कहां चूक हुई जो हम निरंतर पिछड़ते चले गए। विश्व गुरु होने के नाते शैक्षिक रूप से पिछड़े भारत के गौरव की दृष्टि से बहुत बड़ा चिंता का विषय है। हमारी समस्याओं को कोई बाहर से आकर नहीं सुलझा सकता। अतः इसके लिए हमें स्वयं प्रयास करने होंगे। केंद्र सरकार और राज्य सरकारें मिलकर यदि शिक्षा के गिरते स्तर पर विचार विमर्श करें तो निश्चित रूप से देश के विभिन्न विषय विशेषज्ञों तथा विद्वानों की सहायता से शिक्षा प्रणाली में सुधार लाए जा सकते हैं। इस प्रकार यदि शिक्षा की तमाम समस्याओं का समाधान निकाला जाए तो इस महान राष्ट्र को आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता। सरकारों को चाहिए कि वे अपने–अपने राज्य में शिक्षकों की स्थिति में सुधार लाने का प्रयास करें। उनको उचित वेतन प्रदान करें ताकि शिक्षक वर्ग सम्मान के साथ जी सकें।

वर्तमान समय में भारत में अस्थाई शिक्षकों की नियुक्तियां शिक्षा के गिरते स्तर के लिए उत्तरदाई है। अस्थाई शिक्षकों को अल्प वेतन के कारण परिवार के भरण–पोषण की चिंता हरदम सताती रहती है। आज के महंगाई भरे दौर में जो शिक्षक आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं ऐसे में उनसे बेहतर एवं सकारात्मक परिणाम की उम्मीद नहीं की जा सकती है। जिस देश में हजारों शिक्षक बदहाली में जी रहे हैं वह तरक्की कैसे कर सकता है। शिक्षा के स्तर में निरंतर गिरावट के लिए यह एक बहुत ही बड़ा तत्कालिक कारण है। इस पर यथासमय पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। अध्यापक कोई साधारण व्यक्ति नहीं होता बल्कि वह राष्ट्र का निर्माता होता है। शिक्षक वह दीपक होता है जो स्वयं जलकर दूसरों को रोशनी प्रदान करता है। सृजन और प्रलय दोनों शिक्षक की गोद में पलते हैं इसलिए शिक्षक कोई साधारण व्यक्ति नहीं हो सकता।

इक्कीसवीं सदी का दूसरा दशक अपने अंतिम चरण में है। आजादी के 70 वर्ष बीत जाने के पश्चात् भी

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

हम आज तक शिक्षा में आवश्यकता एवं आशानुरूप गुणात्मक सुधार नहीं ला पाए तथा तमाम शैक्षिक समस्याओं का समाधान नहीं निकाल पाए यह एक चिंता का विषय है। अब और अधिक इंतजार नहीं किया जा सकता है इसलिए शीघ्र अति शीघ्र इस पर ध्यान दिया जाना अत्यंत आवश्यक है। एक समृद्ध, खुशहाल तथा वैभवशाली राष्ट्र के निर्माण के लिए एक अच्छी शिक्षा नीति की आवश्यकता है। हमारी शिक्षा प्रणाली अच्छी होगी और उसे बेहतर ढंग से क्रियान्वित किया जाएगा तो निश्चित रूप से भारत शीघ्र ही उन्नति के शिखर पर होगा। हमें ऐसी शिक्षा नीति बनानी होगी और शिक्षा में ऐसे प्रभावशाली कदम उठाने होंगे जिससे दुनिया के सर्वश्रेष्ठ शिक्षण संस्थानों में हमारे शिक्षा संस्थानों का भी नाम हो। यह बहुत ही दुखद है कि विश्व के सर्वश्रेष्ठ शिक्षण संस्थानों में भारत का नाम कहीं नहीं है। शिक्षा की इस गिरती हुई स्थिति के लिए आखिर कौन जिम्मेदार है। इस तरह भारत को पुनः उसकी खोई हुई प्रतिष्ठा दिला कर पुनः विश्वगुरु के पद पर सुशोभित किया जा सकता है।

भारत में नवजागरण के अग्रदूत तथा बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, अद्भुत प्रतिभा, कुशाग्र बुद्धि, ओजस्वी वक्ता तथा दुनिया को भारत की आध्यात्मिक शक्ति का अहसास कराने वाले महापुरुष स्वामी विवेकानंद जी ने भारतीय शिक्षा प्रणाली के संबंध में अपने महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किए हैं। स्वामी विवेकानंद तत्कालिक शिक्षा प्रणाली से संतुष्ट नहीं थे इसलिए उन्होंने तत्कालीन शिक्षा प्रणाली की बहुत आलोचना भी की है। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि जो शिक्षा दी जा रही है वह मानव के सर्वांगीण विकास के लिए उपयुक्त नहीं है इसलिए उन्होंने मानव निर्माण शिक्षा क की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि वर्तमान शिक्षा बालक के मस्तिष्क का सही विकास नहीं कर सकती। जिस शिक्षा में बच्चों को समझाने की अपेक्षा रटने पर ज्यादा बल दिया जाता हो वह शिक्षा बालक की मस्तिष्क का उचित विकास नहीं कर सकती। इसलिए बच्चा परीक्षाएं तो पास कर लेता है लेकिन उसमें वास्तविक गुणों का अभाव रहता है। जो शिक्षा जनसाधारण को जीवन संघर्ष के लिए तैयार नहीं कर सकती वह किस काम की है। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि जो शिक्षा चरित्र– निर्माण नहीं कर सकती, जो सामाजिक गुणों का विकास नहीं कर सकती, जो शिक्षा व्यक्ति को स्वाबलंबी नहीं बना सकती, जो शिक्षा बालक के अंदर राष्ट्रप्रेम की भावना का विकास नहीं कर सकती ऐसी शिक्षा व्यर्थ है। उनका मानना था कि शिक्षा को केवल सूचनाओं तक सीमित नहीं रहना चाहिए। इसलिए स्वामी विवेकानंद जी ने उस समय की शिक्षा पर प्रहार करते हुए उसे उचित नहीं ठहराया। शिक्षा के संबंध में अपने महत्वपूर्ण विचार व्यक्त करते हुए स्वामी विवेकानंद जी ने कहा कि हमें एक ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण हो सके जो मस्तिष्क का विकास कर सके और जिससे बुद्धि का उचित विकास होता है। जिस शिक्षा से मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा होकर स्वाबलंबी बनें आज हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है। उन्होंने सैद्धांतिक शिक्षा के स्थान पर व्यावहारिक शिक्षा पर अधिक बल दिया है। व्यवहारिक शिक्षा के संबंध में विवेकानंद जी ने अपने महत्वपूर्ण विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि हमें व्यावहारिक बनना पड़ेगा सिद्धांतों के ढेरों ने संपूर्ण देश का विनाश कर दिया है। इस प्रकार स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा के संबंध में बहुत ही महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किए हैं । उन्होंने कहा कि शिक्षा को केवल ज्ञान तक सीमित नहीं रहना चाहिए बल्कि ज्ञान के साथ–साथ व्यावहारिक शिक्षा पर भी बल दिया जाना चाहिए। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि शिक्षा मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है इसलिए सही शिक्षा वह है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करे और उसके भीतर विश्व चेतना और विश्व बंधुत्व की भावना का विकास करने में सफल हो। अच्छी शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाती है और भयमुक्त करती है।

भारत के महान कर्मयोगी तथा भारतीय राष्ट्रीयता के अग्रदूत तथा भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक एवं महान दार्शनिक और शिक्षाविद श्री अरविंद घोष ने शिक्षा के संबंध में अपने महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किए हैं। एक आदर्शवादी दार्शनिक के रूप में श्री अरविंद घोष ने शिक्षा के संबंध में अपने महत्वपूर्ण विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ब्रह्मचर्य शिक्षा का आधार होना चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षा केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं है। शिक्षा द्वारा ज्ञान में वृद्धि कर जीवन को सकारात्मक दिशा प्रदान की जा सकती है। उन्होंने कहा कि जहां से ज्ञान को प्रारंभ किया जाए या नई खोजों को निकालना शुरू किया जाए वह शिक्षा है। जो अपने को ज्ञान देने तक सीमित रखती है वह शिक्षा नहीं है। श्री अरविंदो के अनुसार शिक्षा मानव के मस्तिष्क और आत्मा की शक्तियों का विकास करती है। वर्तमान आधुनिकता की चकाचौंध तथा भागदौड़ भरी जिंदगी में आज हर व्यक्ति अपनी मानसिक शान्ति खो चुका है ऐसी स्थिति में भारत के महान दार्शनिक एवं शिक्षाशास्त्री श्री अरविंद घोष की शिक्षा प्रणाली पर विचार करना अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार विभिन्न शिक्षा नीतियों का गहन अध्ययन कर वर्तमान समय में उनके सुझावों तथा सिफारिशों की प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए भावी पीढ़ी की आशा

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

और आकांक्षा के अनुरूप एक बेहतर शिक्षा प्रणाली को विकसित किया जा सकता है। आज एक ऐसी शिक्षा नीति की आवश्यकता है जिसके द्वारा सकल शैक्षिक समस्याओं का स्थाई समाधान निकाला जा सके। राष्ट्र के चहुंमुखी विकास के लिए यह अत्यंत आवश्यक है।

*****